I. REPORTS OF THE COMMISSIONER FOR SCHEDULED CASTES AND SCHEDULED TRIBES

II. REPORT OF THE COMMITTEE ON UNTOUCHABILITY, ECONOMIC AND EDUCATIONAL DEVELOPMENT OF THE SCHEDULED CASTES.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF LAW AND IN THE DEPARTMENT OF SOCIAL WELFARE (SHRI JAGANNATH RAO) : Sir, I beg to move :

"That the Sixteenth, Seventeenth, and Eighteenth Reports of the Commissioner for Scheduled Castes and Scheduled Tribes for the years 1966-67, 1967-68 and 1968-69, laid on the Table of the Rajya Sabha on the 29th April, 1968, 15th May, 1969 and 30th March, 1970, respectively, be taken into consideration."

Sir, I also move :

"That the Report of the Committee on Untouchability, Economic and Educational Development of the Scheduled Castes (Parts I—V), laid on the Table of the Rajya Sabha on the 6th May, 1969, be taken into consideration."

Sir, I do not want to make any speech at this stage but I will reply to the debate to save time.

MR. DEPUTY CHAIRMAN : All right.

The questions were proposed.

श्री राजनारायण (उत्तर प्रदेश) : श्रीमन्, मैं आपका और आपके द्वारा इस सदन का तथा विरोधी पक्ष के उन सम्मानित सदस्यों का बहुत ही अनुगृहीत हूं जिन्होंने मुझे आज यह अवसर प्रदान किया है । जब मैं शेड्यूल्ड कास्ट, परिगणित जातियों से सम्बन्धित विषय पर इस सदन में चर्चा करने के लिए खड़ा हुआ हूं तो सर्वप्रथम हमको यह कह देना चाहिये कि भारत की सरकार आज तक परिगणित जातियों की तकदीर को आगे बढ़ाने के लिए कोई ठोस कदम उठा सकने में असमर्थ रही है । श्रीमन्, परिगणित जाति की समस्या क्या है । मैं समझता हूं कि अगर सांस्कृतिक स्तर पर हम परिगणित जाति की समस्या को सचमुच में सुधारने के लिये आगे नहीं बढ़ेंगे तो हमारा भविष्य अन्धकारपूर्ण रहेगा । क्या इस सदन के सम्मानित सदस्य इस बात को मानने से अब भी गुरेज करेंगे . . .

SHRI G. A. APPAN (Tamil Nadu) : Mr. Deputy Chairman, Sir, one point. The honourable Minister has moved a motion that the three Reports of the Commissioner for Scheduled Castes and Scheduled Tribes . . .

SHRI K. S. CHAVDA (Gujarat) : There is one more.

SHRI G. A. APPAN : . . . and the Elayaperumal Committee Report be taken into consideration. I feel that these Reports relating to three different years and another Report which has no connection with these Reports are submitted by a statutory authority called the Commissioner for Scheduled Castes and Scheduled Tribes appointed by the President and whose Reports are presented to the President who commits these things to both the Houses of Parliament

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Now what is your point ?

SHRI G. A. APPAN : The question is how far we would be justified in taking up all these three voluminous Reports and the separate Report of the Elayaperumal Committee at one and the same time. I request that these three Reports be discussed separately and the Elayaperumal Committee Report also be discussed separately. In view of that I feel that the Chair should be able to give some ruling on this issue because the Reports relate to various period and not one period.

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Mr. Rajnarain, you may continue.

SHRI G. A. APPAN : Now what is your ruling, Sir ?

SHRI K. S. CHAVDA : Sir, he has an important point.

MR DEPUTY CHAIRMAN : I have understood his point. There is no point in repeating the points because I have understood his point, that the Reports have not been discussed. Now that an opportunity to discuss all those Reports is given, I think that discussion will serve the purpose fully. So let us allow Mr. Rajnarain to continue.

श्री बी० एन० मंडल (बिहार) : मिनिस्टर को कहा जाय कि दोनो को सेपरेट कर दें, जो कमिश्नर की रिपोर्ट है वह अलग और जो कमेटी की रिपोर्ट है वह अलग । कमेटी की रिपोर्ट को निश्चित तरीके से अलग कर देना चाहिए, उसे दूसरे सेशन में लाइए । इस सेशन मे कमिश्नर की—रिपोर्ट को डिस्कस कर ले ।

श्री उपसभापति : हो सकता है इस मोशन पर अगले सेशन मे बहस हो । अभी जिन सदस्यो को बोलना है वे दोनों रिपोर्ट के बारे में अपने विचार पेश कर सकते हैं ।

श्री राजनारायण : श्रीमन्, मैं जो रिपोर्ट देने जा रहा हूं वह कमिश्नर के बूते के बाहर है, वह रिपोर्ट देना जो शेड्यूल्ड कास्ट में पैदा हुए लोग है उनके बूते के भी बाहर है । तो जरा शांतिपूर्वक सुना जाय । तो मैं यह अर्ज कर रहा था—हमारे मित्र बीच में खड़े हो गए, धारा टट गई—कि भारत की सरकार और उससे सम्बन्धित राज्य सरकारें परिगणित जातियों की दशा को सुधारने के लिए आज तक कोई ठोस काम नही कर पाई । इस बात को बहुत ही आसानी से कबूल कर लिया जाना चाहिए ।

मैंने पहले ही कहा था . . . (Interruptions) अगर सुनेंगे नही तो हम चले जाएंगे ।

श्री उप सभापति : राजनारायण जी, हम सुन रहे हैं ।

श्री राजनारायण : आपका तो विषय है, आप तो सारनाथ भी हो आए हैं . . .

श्री उपसभापति : रिपोर्ट की बात बोलिए ।

श्री राजनारायण : यह उसी रिपोर्ट से सम्बन्धित है । इस रिपोर्ट पर बहस करके क्या करेंगे अगर आप सारनाथ जाकर लोगों को आगे बढाने की कोशिश नही करेंगे क्योंकि सारनाथ में सर्वप्रथम भारतवर्ष में मानव धर्म, मानवता एक है इसका उपदेश दिया गया, वह जगह सारनाथ है । जहां पर कि गौतम बुद्ध, जिन का पहला नाम सिद्धार्थ था, वे जब बोध गया से आये हैं तो सारनाथ में उन्होने अपना पहला भाषण दिया और प्रारम्भ में सारनाथ में उन को केवल 6 शिष्य ही मिले है और उन छहों शिष्यो ने कहा कि हमारा समाज तो चार वर्णों का है । इस मे ब्राह्मण हैं, क्षत्रिय हैं, वैश्य हैं, शूद्र है और आप कहते है कि मनुष्य बराबर है, समान है, इस में ऊंच नीच और छोटा बडा नही माना जाता . . .

SHRI MAHAVIR TYAGI (Uttar Pradesh) : There is no quorum.

MR. DEPUTY CHAIRMAN : We have to ring the Bell.

THE LEADER OF THE OPPOSITION (SHRI S. N. MISHRA) : Now that he has already begun the speech, the Supreme Court would at least give him this courtesy of completing his speech on Monday.

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI OM MEHTA) : You ring the quorum bell and I will bring the Members to complete the quorum.

SHRI S. N. MISHRA : Please adjourn the House.

SHRI CHANDRA SHEKHAR (Uttar Pradesh) : The Supreme Court will allow him.

श्री राजनारायण : सुप्रीम कोर्ट को कहेगा कौन ? आप लिख कर भेजिए, आप का सेक्रेटरी भेजे ।

SHRI OM MEHTA : We will continue the discussion.

SHRI MAHAVIR TYAGI : If the speech of Shri Rajnarain is to continue, the Supreme Court will allow on Monday.

SHRI S. N. MISHRA : Yes.

SHRI CHANDRA SHEKHAR : We share the sentiments of the Leader of the Opposition.

श्री राजनारायण : आप हम को भाषण भी न करने दें और गाने भी न दें , यह क्या है ?

SHRI CHANDRA SHEKHAR : It will go to the Supreme Court.

श्री राजनारायण : श्रीमन्, यह तो ठीक नही है ।

SHRI CHANDRA SHEKHAR : It cannot be made a formal one.

SHRI S. N. MISHRA : A very humble request to the Supreme Court.

SHRI OM MEHTA : We are meeting only on Monday and on that day we are having a discussion on the land-grab movement also. It will not be possible for us to complete the discussion of these reports on that day and as decided earlier, it will have to be postponed till the next Session. If Shri Rajnarain is allowed by the Supreme Court, he can speak on Monday.

श्री राजनारायण : श्रीमन्, . . .

SHRI CHANDRA SHEKHAR : The quorum is already there now. He can now speak.

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Shri Rajnarain may continue his speech now. आप राजनारायण जी को बोलने दीजिए ।

श्री श्याम नन्दन मिश्र : आप 40 मिनट से कम बोलेंगे क्या

श्री राजनारायण : मैं तो 3 घटे बोलूगा । आप हमारी सुसीयत देखिये, अब कोरम नही है । एक मामले में तो हम हार गये जिस के लिए मैं सुप्रीम कोर्ट से यहा आया । तो मै यह कह रहा था कि उस के बीच में कई बार लोगों ने बोल कर हमारी धारा रोकी । असल मे उन का मूड नही हैं । तो मैं यहा मोटी मोटी बात कहना चाहता हूं । शेड्यूल्ड कास्ट की तकदीर कैसे सुधरेगी और उस की तकदीर क्यो खराब है ? सारनाथ में बुद्ध ने अपने शिष्यो से कहा कि मानव समाज का जो बंटवारा है ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र मे वह गलत है । यह सब एक है । उन्होने कहा कि कैसे ? तो गौतम बुद्ध ने कहा कि तुम एक ब्राह्मण ले लो और एक शूद्र ले लो, एक औरत ले लो और एक मर्द ले लो और दोनो में संभोग हो । अगर गर्भ रहा तो क्या पैदा होगा ? उन के शिष्यों ने कहा कि बच्चा पैदा होगा । तो उन्होंने कहा कि अगर इन की जाति एक न होती तो ब्राह्मण और शूद्र के संभोग से बच्चा पैदा कैसे हुआ । इस बात से उन के शिष्यो के दिमाग का कुहरा छट गया । और सब शिष्य समझ गये कि मानव जाति वास्तव मे एक है । और वही मानव-जाति का एक सदेश लेकर आज बौद्ध धर्म चल रहा है और मैं पूछना चाहता हूं सरकार से कि सरकार इस बात को क्यों नही देखती कि हमारे खोबरागड़े साहब भी बौद्ध धर्मावलम्बी है, यह सारनाथ में गये जहां पर पाच हजार आदमी एक साथ बैठ कर के भोजन किये और जहा पर तमाम सनातन धर्म, हिन्दू धर्म, की बधिया बैठाई । मैं इनकी तारीफ करता हूं, मै इनकी सराहना करता हूं, इन्होने यह काम अच्छा किया, बढ़िया किया । क्या सरकार हमको एक नजीर देगी कि सरकार की ओर कोई ऐसा वातावरण बनाने की कोशिश हुई जिससे कि ब्राह्मण अपने को ऊचा न समझे और हरिजन अपने को नीचा न समझे ? सरकार की ओर से क्या आज तक कोई ऐसा प्रयत्न हुआ है जिससे ब्राह्मण का ब्राह्मणत्व और चमार का चमारत्व खत्म हो जाय ? जब तक चमार का चमारत्व नहीं जायगा और ब्राह्मण की ब्राह्मणयी नही जायगी तब तक मानव समाज एक समतल नही हो सकता । हमारे मंत्री महोदय हमको कोई एक नजीर दे दें क्योकि मोहन धारिया और चन्द्र शेखर दोनो समाजवाद की बात करते हैं, मुझे बहुत खुशी है लेकिन समाजवाद क्या भारत में अर्थवाद में फस कर रहेगा ? भारतवर्ष का समाज दूषित है, भारतवर्ष का समाज सड़ा हुआ है और आज भारत की तरक्की मे सब से बडी बाधा यह है कि भारतवर्ष में वर्ण-व्यवस्था और जाति-व्यवस्था है । तो भारतवर्ष की वर्ण-व्यवस्था और जाति-व्यवस्था पर कुठाराघात करने के लिये भारत की सरकार ने 15 अगस्त 1947 से आज तक भारत-वर्ष में कौनसा ऐसा वातावरण बनाया ?

[श्री राजनारायण]

श्रीमन्, मै श्रीमान खोबरागड़े साहब से निवेदन करूगा कि वह एक दिन जरा कुशीनगर चले जाये जहा पर कि बुद्ध की विशाल समाधि बनी हुई है, वहा पर जो हरिजन जाते है, जो पिछड़ी जाति के लोग जाते हैं, जो भी जाते है वह राम राम, राम राम, जय हनुमान जय हनुमान, जय राम, जय राम कहते जाते है, जाते है बौद्ध धर्म के बुद्ध का दर्शन करने और उनके मुह मे राम राम, जय हनुमान, जय हनुमान निकलता है । क्यो ? इतने दिनो से उनके दिमाग को इस जड़ता ने दबोचा हुआ है कि बुद्ध के दर्शनार्थ जा रहे है कुशीनगर और वहा जय हनुमान जय हनुमान, राम राम, का नारा लगाते है ।

श्रीमन्, आप भी जरा ध्यान दे कर सुने । "रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम ।" यह क्यो होता है । आज गुजराल साहब यहां नही है, गुजराल साहब कहते है कि हम सन् 1942 की क्रान्ति में थे और श्री जनेश्वर मिश्र हमारे क्रान्तिकारी नेता को कह दिया कि आप कहा थे, मैं गुजराल साहब से पूछना चाहता हू कि गुजराल साहब के रेडियो से इस का प्रसारण क्यो हो ? क्या जो सरकार रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीता राम का पाठ नित्य प्रति करावेगी वह शेड्यूल्ड कास्ट को शोषण से बचा सकती है ? इस सरकार का दिमाग कितना सड़ा हुआ है । जब पतित होगा कोई तभी तो पतित पावन होगा न ? मै आज कहना चाहता हू कि भारतवर्ष में न आज कोई पतित हो और न पतित पावन की आवश्यकता है ।

श्री अकबर अली खान (आध्र प्रदेश) महात्मा गाधी के जलसो मे यह तो गाया जाता था ।

श्री राजनारायण इसी लिये मै अर्ज कर रहा हू कि गाधी जी के सद्गुणों को तो अकबर अली खान साहब भूल गये और गाधी जी ने जो एक परम्परावाद को चलाया था उसको अकबर अली खान साहब ने ले लिया । अकबर अली खान साहब आप बैठिये, आप इसका जरा जवाब दीजिये । पतित पावन के माने है जो पतित है, जो मजलूम है, महरूम है, उस को उठाने वाला ।

मैं श्रीमन्, आज अकबर अली साहब से एक बात जानना चाहता हू । मै बड़े बड़े मुसलमानों के जल्से में जाता हू, बड़ी बडी दाढी रखने वाले मिञ वहां रहते हैं, मगर जब मैं कुरान की आयत सुनाने लगता हू तो वह ताकने लगते है यह कहा से आ गया । क्योंकि हमारा अर्थ दूसरा है उनका अर्थ दूसरा है । तो घबराते है । मैने उनसे पूछा कि भाई कबीर के इस दोहे को क्यो नही याद करते । "जो तू ब्राह्मन जाया आन बाट काहे नही आया ।" कबीर कहा पैदा हुए लुहारू जाति में पैदा हुए वाराणसी के नजदीक, जहा बनारसी साड़ी बनती है, जो आजकल विदेशी मुद्रा अर्जित करती है । कबीर कहते थे न मै हिन्दू हू न मुसलमान हू । मै इनसान हू । कबीर को मार पड़ी है लडकपन मे । एक दिन कबीर ने कहा भाई सुनो, तुम कहते हो ब्राह्मण है, सबसे श्रेष्ठ हैं, ऊचे हैं । लेकिन उन्होंने कहा तुम ब्राह्मणी के पेट से पैदा हुए तो ब्राह्मण कहलाते हो, तुम हमसे ऊचे कैसे हो । उन्होंने सवाल पूछा कि जब तुम हमसे ऊचे हो तो कोई दूसरे रास्ते से क्यो नही निकल गये । ब्राह्मण यह सुन कर चुप हो गया । मुसलमान से कबीर ने ललकार कर कहा

"जो तू तुर्की "

ऐ मुसलमान, तुम अपने को कहते हो हिन्दुओं से अलग हो, तो ईमानदारी से बताओ तुम मुसलमानी के पेट से पैदा हुए तो क्या तुम्हारा खतना पेट मे कटा था । तुम्हारा खतना पेट मे नही कटा । मा के पेट से, कुदरत के घर से हिन्दू और मुसलमान का बच्चा निकला है । एक ही घर से निकला है । तो मजलूम, महरूम रहेगे तब न उनको उठाने वाला होगा । कोई पतित, नीच, भ्रष्ट रहेगा तब न कोई उद्धारक होगा ? तो मै चाहता हू कि भारत सरकार ऐसी व्यवस्था करे कि इस देश मे न कोई पतित रह जाये न कोई पतित पावन की जरूरत हो क्योंकि जब तक पतित पावन की जरूरत रहेगी तब तक पतित रहेगे । इसलिये रेडियो की नीति ऐसी होनी चाहिये कि रेडियो के जरिये कहना चाहिये कि मानव समाज एक है, मानव धर्म एक है, मानवता का बटवारा नही किया जा सकता, मानवता अविभाज्य है । क्या सरकार के दिमाग मे इस बात की सफायी है कि मानवता का बटवारा नहीं किया जा सकता, मानवता अविभाज्य है ? अगर सरकार के दिमाग मे यह बात है तो सरकार रेडियो से इसका प्रसार क्यो नही करती ? क्या कभी गुजराल साहब के रेडियो वालो ने हमसे कहा है राजनारायण तुम

हिन्दू मुसलमान और जातपांत के बारे में रेडियो पर चलकर सुनाओ ऐसे लोगों के भाषण सुनाना रेडियो पर प्रसारण कर ना जिनको सुनने से किसी के दिमाग में कोई नया जीवन पैदा करने की बात न हो, इससे क्या फायदा होना है ? इसलिये सर्वप्रथम मै कहना चाहता हूं : सरकार को सर्वप्रथम अपने दिमाग को साफ करना चाहिये । सरकार को यह कहना चाहिये कि अब मानव मानव समान है इसका प्रसारण रेडियो से होगा ; रेडियो पे वह सभी प्रसारण बद किये जायेंगे जो मानव को मानव से दूर रखते हैं जो मानव-मानव मे भेद पैदा करता है जो मानव-मानव मे कटुता और दुराव और अलगाव पैदा करते है । क्या सरकार कोई ऐसी गारन्टी देने को तैयार है कि रेडियो से प्रसारण इस नुक्तेनजर से होगा ?

आगे देखा जाये श्रीमन् । तमाम हमने छान डाला है, एक हं श्लोक हमको मिला है, गौतम सूत्र का 22वां श्लोक है जो कहता है "समान प्रसवात्मिका जातिः" इस श्लोक का प्रसारण उनके रेडियो से एक बार भी हुआ है क्या ? एक बार भी नही हुआ है । अंधे के आगे रोये अपना दीदा खोये । ये बिलकुल अंधे है । उनकी समझ में यह गूढ़ तत्व आ ही नही सकता है । जो किताब में लिख दिया जाय वह किताब के पन्ने में ही रह जायेगी, वह व्यवहार मे नही आयेगी । जब तक दिमाग साफ होकर उसके मुताबिक कदम नही उठायेंगे तब तक यही होगा ।

मै कहना चाहता हू कि क्या हमारे परिगणित जाति के भाई आज हिन्दू, मुसलमान, चमार, सिख और ईसाई और सम्पूर्ण मानव समाज को एक एकाई मानने के लिए तैयार है । आज हरिजन लोग कहते है कि हम मुसलमान हरिजनो और परिगणित जाति के लोगो को नहीं लेंगे । जब वे यह बात कहते है तो मै कहता हूं कि यह तुम्हारा पिछड़ाव बोल रहा है और तुम्हारे दिमाग का जाला अभी तक नही कटा है । तुम को कहना चाहिये कि मनुष्य मनुष्य एक है । जब तुम अपने को किसी से बड़ा मानोगे तो दूसरा भी अपने को बड़ा मानेगा । हम चाहते है श्रीमन्, आज तक भारतीय समाज मे जो जाति व्यवस्था की लकीर खड़ी है उसको पड़ी कर दे । इस बात को श्री चन्द्र शेखर ठीक समझ और श्री ए० पी० सिंह का तो पता नही वे बीच मे क्या बोलते रहते है । आज हमारे देश मे जाति की लकीर खड़ी है ।

श्री उपसभापति आप का समय खत्म हो गया है ।

श्री राजनारायण हमारा समय श्रीमन्, खत्म न कीजिये । आज हमारे देश मे जो जाति की लकीर है वह एक के ऊपर एक खड़ी है । हम क्या चाहते है । शिड्यूल्ड कास्ट के वेलफेयर के लिए और जो परिगणित जाति के उत्थान के लिए लालायित हैं उनसे मैं अर्ज करना चाहूगा कि भारतवर्ष मे जो जाति की लकीर है उसको पड़ी करो । खड़ी नही पड़ी ताकि सब बराबर हो जाय । अगर खड़ी रहेगी तो ऊच-नीच की भावना रहेगी । इसलिए जो जाति की लकीर आज तक हमारे देश में खड़ी है उसको पड़ी किया जाय । क्या गुजरात का रेडियो हमारे इस भाषण का सार तत्व निकालकर अपने रेडियो द्वारा ब्राडकास्ट करायेगा ? नही करायेगा क्योकि यह तो जीवन के अग और दिल व दिमाग को झकझोरने वाला है । जब तक इन्सान के दिमाग मे इस तरह की बाते नही भरी जायेगी, जब तक उसका दिमाग झकझोरा नही जायेगा तब तक काम बनने वाला नही है । इसलिए मैं चेतावनी देना चाहता हूं कि आपने बर्रे की छत मे आग लगा दी है और आप ने उस बर्रे की छत मे आग लगा कर जो बर्रे उसमें है वे फरफरा रहे है ।

श्रीमन्, आप हमे बिना लेकर चले गये सारनाथ और वहा से लौट आये । अब एक प्रोग्राम बनाया जा रहा है सनातन धर्मियो द्वारा । अयोध्या से एक ब्राह्मण का समूह लगातार कपड़ा बिछाते हुए बनारस तक जाये । मै पूछना चाहता हू कि किस के दिमाग द्वारा इस तरह की खुराफात की बातें पैदा होती है । क्या सरकारी पक्ष के लोग इसमें नही है ! मै इधर इसकी चर्चा नही करना चाहता था मगर मै बगैर चर्चा किये न अपने साथ और न ही अपने सम्मानित सदस्यो के साथ न्याय कर पाऊगा । हमारे सर्वप्रथम राष्ट्रपति स्वर्गीय डा० राजेन्द्र प्रसाद, जिनकी मैं बहुत इज्जत करता हू, जिनके मै बहुत नजदीक रहा हू, उन्होने बनारस मे काशी के राजा की कोठी मे 101 ब्राह्मण द्वारा चरणामृत लिया । यह किस के दिमाग का द्योतक है और क्या इस बात की तरफ सरकारी पक्ष का ध्यान

[श्री राजनारायण]

जा रहा है कि भारत के राष्ट्रपति, प्रथम राष्ट्रपति, जो स्वतन्त्रता संग्राम के एक सेनानी रह चुके है, वे ब्राह्मणो का चरणामृत लेते है । आपको जानकर इस बात का दुःख होना चाहिये कि उसमें हमारे एक दल का चला गया था श्री जगन्नाथ उपाध्याय जो बनारस सस्कृत विद्यालय मे बौद्ध दर्शन का हैड है । जब जगन्नाथ उपाध्याय को यह मालूम हुआ कि यहा पर ब्राह्मणो का चरणामृत दिया जायेगा तो वह भाग खड़ा हुआ । इस तरह से वहां पर 101 ब्राह्मणों की जगह पर 100 ही ब्राह्मण रह गये । एक ब्राह्मण की कमी को पूरा करने के लिये पुलिस वाले एक राह चलते हुए आदमी को पकड़ लाये और उसे 101 नम्बर वाला ब्राह्मण बना दिया और तब जाकर डा० राजेन्द्र प्रसाद जी ने चरणामृत छुआ और सब ब्राह्मणो को ग्यारह ग्यारह रुपया दक्षिणा के रूप मे दिया । तो मै यह जानना चाहता हू कि यह किस के दिमाग का द्योतक है । क्या श्री अप्पन साहब के दिमाग का द्योतक है और क्या ऐसे दिमाग से परिगणित जाति के लोगो का उत्थान होगा ? हरगिज़ नही । अगर परिगणित जाति के लोगो का उत्थान करना है तो इस दिमाग को खरोचो और गहरा पजा मारकर उसको साफ करो वरना दिमाग साफ नहीं होगा ।

मै आज पूछना चाहता हू कि आज ईमानदारी की बात होनी चाहिये । अगर हमारी कोई लडकी हो और वह लड़की हरिजन से शादी करने के लिए तैयार हो जाय तो हम कोशिश करेगे कि वह शादी हो जाय और हम बराबर इस बात की कोशिश करते रहते है । इस बारे मे हमारे दिमाग मे एक मात्र के लिए भी हिचक नही होगी कि हमारी लड़की चमार के लड़के के साथ शादी करने जा रही है । मगर मै जानना चाहता हूं कि आज जो सरकारी पक्ष के मत्रीगण है, जिनके पास वह प्रभुताई है, अगर उनका दामाद कोई हरिजन आ जाय तो उस हरिजन की जिन्दगी क्या वे ठीक से चला पायेगे ? किस मत्री ने हरिजन से शादी की अपने घर में, हरिजन लड़के को अपनी लडकी किसने दी ? 1947, 15 अगस्त से आज 1970 आ गया, राष्ट्रपिता की जन्म-शताब्दी भी मना दी गई, फिर भी आज कांग्रेस मत्रिमंडल का एक मत्री नही निकला ब्राह्मण या क्षत्रिय या वैश्य जो अपनी लड़की को हरिजनो को देने के लिए तैयार हो । हा, कोई इस तरह निकल जाय तो निकल जाय लेकिन स्वेच्छा से, प्रसन्नता के साथ, समारोह करके कोई मत्री तैयार नही हुआ है । कोई हुआ है, जगन्नाथ राव जी ? नही हुआ है तो केवल कागज पर परिगणित जाति का उत्थान करेगे ? यह तमाम कमीशन बना कर रुपया खर्च करने का फायदा क्या ? चू-चू का मुरब्बा, कही की ईंट कही का रोड़ा, भानमती ने कुनबा जोड़ा, भानमती का कुनबा जोड़कर एक रिपोर्ट बना कर रख दी ।

आज हमारे आदरणीय राम मनोहर लोहिया यहां नही है, लेकिन मै कहना चाहता हूं कि उनकी हिम्मत थी, उनका साहस था कि वाराणसी मे 1958 मे उन्होंने सोशलिस्ट पार्टी के अधिवेशन मे कहा कि पिछडी जातियो को जीवन के हर क्षेत्र मे 60 फीसदी जगह कम से कम मिलनी चाहिए । तमाम हरिजन, तमाम आदिवासी, तमाम गरीब-दबे मुसलमान, औरते, शूद्र यह 95 फीसदी होते है, मगर आज सभी सेवाओ को देख लिया जाय तो उन्हे 5-10 फीसदी जगह भी नही है । भारतवर्ष की तमाम जनता के 95 फीसदी भाग को सरकारी सेवाओ मे 10 फीसदी से भी कम स्थान प्राप्त है । देश कैसे आगे बढ़ेगा ? एक पार्टी आपके देश मे है, श्रीमन्, सयुक्त सोशलिस्ट पार्टी जो लगातार हैमरिंग कर रही है, लगातार इस बात को कह रही है, मगर इस सरकार के बूते की यह बात नही है कि सरकार इस को कह सके । हमारे मित्र अप्पन साहब जानते होंगे, हम खुद भुक्तभोगी है ।

श्री उपसभापति : आप अप्पन साहब के बारे में बोलना चाहते है तो ऐसी भाषा मे बोलिए कि वे समझ सके ।

श्री राजनारायण : हमारी बात समझ रहे है ?

श्री उपसभापति : आपके 7 मिनट है क्योंकि 6 बजे हमको हाउस एडजर्न करना होगा । आप 40 मिनट बोल चुके है, और कितना बोलना चाहते है ?

श्री राजनारायण : मुझे आराम से सुनिए, मैं इधर उधर की बात नही कर रहा हू । हमारी एक आई०सी०एस० से बातचीत हुई, मै नाम नही बतलाऊगा, उन्होंने कहा राजनारायण जी चाहे आप कितना ही कानून बनाइए, हम ब्राह्मणो, राजपूतो और वैश्यो

को सर्विसेज मे च नवायेगे । हमने कहा कैसे, तो उन्हो ने कहा कि सारी सर्विसेज के लिए आदमियो का हम साक्षात करते हैं, अगर—परिगणित जाति का लड़का तेज भी होता है तो हम साक्षात के नम्बर बढ़ा देते है । क्या इस सरकार ने कोई ऐसा कानून बनाया जिसके जरिए यह सम्भव हो कि जो हरिजनो के साथ अन्तर्जातीय शादी करेगा नौकरी मे उसको पहले जगह मिलेगी और जगह मिलने के बाद उसको 100 रुपया, 50 रुपया स्पेशल भत्ता मिलेगा ? अगर सरकार इस तरह का कानून नही बनाती, केवल यह सरकार कहती है कि हम परिगणित जातियो का उत्थान करेंगे मौखिक तो वह कभी होने वाला नही है । जैसे हिन्दू समाज में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और जो ये द्विज है आज अद्विज कहे जाने वाले लोगो पर अपना शोषण जमाए हुए हैं, खूनी पंजे जमाए हुए है, उसी तरह से, शीमन्, आज मुसलमानो में शेख, सैयद है, जो बडे बडे नवाब और ताल्लुकेदार है वे अन्सारी लोगो पर, जो जुलाहे लोग हैं, भिश्ती लोग है, हेला लोग है, इन लोगो के ऊपर अपना रोब जमाए हुए है, इनके यहा भी छुआछूत बढ़ता जा रहा है, इनके यहा भी होता है "तुम अलग रहो" । अकबर अली खान साहब मे मैं पूछना चाहता हूं कि गांधी जी जिस तरह हरिजनो की बस्ती में निवास किया करते थे, क्या अकबर अली खान साहब जुलाहो की बस्ती मे जाकर अपनी जिन्दगी वहा बितायेगे या हैदराबाद मे जाकर अपनी आलीशान नवाब साहब की कोठी मे रहेंगे . . .

श्री उपसभापति : आप अकबर अली खान साहब को क्यो कह रहे हो ?

श्री राजनारायण : वे नवाब है, मै जानता हू, और, जैसा चन्द्रशेखर कहते है, पुराने जो ध्वसावशेष है उनके प्रतीक है । तो मै उन को बताना चाहता हू कि आखिर यह चीज चलेगी कैसे, बढेगी कैसे ? 95 फीसदी और 5 फीसदी और 5 फीसदी और 95 फीसदी । इसलिये हम ने कहा कि 60 फीसदी का सिद्धान्त सीधा सिद्धान्त है । 95 को 60 दो और 5 को 40 दो । यह भी मजे की बात है कि गरीब ब्राह्मण और ठाकुरो के लडके भी बहुत जगह जगह नही पाते, मगर जब चुनाव का मौका आता है तो जातिवाद की जो लहर बहती है वह सारे सिद्धान्तो को दबा कर बैठा देती है, चकनाचूर कर देती है । एक मिसाल है कि खरबूजे को देख कर खरबूजा रग बदलता है । हमारा दल अछूता था इस रोग से, मगर मै देख रहा हू कि उस में भी कही कही यह रोग घुस रहा है । कांग्रेस पार्टी और श्रीमती इन्दिरा नेहरू गाधी और श्रीमती फीरोज गाधी के इधर जो कार्य-कलाप रहे है उन्होने इस को बडा बढावा दिया है क्यो कि देश में जातीवाद और हिन्दू-मुसलमान और पैसावाद इन तीनो को चला कर वह अपने प्रधान मन्त्रित्व को कायम रखना चाहती है और इस के लिए लालायित है और उधर ही चल रही है । इसलिए मै चाहता हू कि आप और सदन इस सरकार को हिदायत दे कि सरकार ऐसी व्यवस्था करे जिस मे कि परिगणित जाति के बच्चो की पढाई, उन की खुराक, उन के मकान, इन सब की व्यवस्था सर्वप्रथम हो । मां के पेट से न कोई गरीब पैदा होता है और न कोई अमीर । गरीब वह है जिस के पास दौलत पैदा करने का जरिया नही है, और दौलत पैदा करने के जरिये क्या है ? दौलत पैदा करने का जरिया है खेत दौलत पैदा करने का जरिया है कल-कारखाने, दौलत पैदा करने का जरिया है खदाने, दौलत पैदा करने का जरिया है कारबार, धधा और नौकरी पेशा । परिगणित जाति के लिए इस सरकार ने कितने खेत का इंतजाम किया है, उन के लिए इस सरकार ने लघु उद्योगों का कितना प्रबन्ध किया है ? परिगणित जातियो के लिए इस सरकार ने खदानो मे कितनी जगहे दी है, उन को कल-कारखानो में कितनी जगह दी ? और क्या केवल मौखिक बात से ही यह सब हो जायगा ? महर्षि पतजलि ने कहा है : "जिस मे समता का व्यवहार हो वह समाज है ।" इससे बड़ा वाक्य हमारी इन्दिरा नेहरू गाधी या गुजराल साहब नही कह सकते, लेकिन वह वाक्य पोथी में धरा रह गया । जो पतजलि का समता का सिद्धान्त अपना कर समाज को उठाना चाहते थे वे विषमता के गर्त मे ही आज समाज को गिरा रहे है । कृष्ण को योगी माना जाता है । कृष्ण ने गीता मे उपदेश किया है :

"विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिता समदर्शिन ॥"

विद्या-विनय से सम्पन्न ब्राह्मण हो, गाय हो, हाथी हो, कुत्ता हो, चाण्डाल हो, सब को वे बराबर मानते है । कृष्ण का यह वाक्य भारतीय समाज में कभी चरितार्थ हुआ क्या ? क्या इस ने भारतीय समाज मे

[श्री राजनारायण]

कभी मूर्तिमान स्वरूप ग्रहण किया है ? नही किया । जो कृष्ण इसान में, पशु मे, पक्षी मे, कुत्ते मे, बराबरी का पाठ पढ़ाता है आज उस कृष्ण का देश भ्रष्टाचार के गर्त मे डूबा जा रहा है, विषमता के गर्त में डूबा जा रहा है, इस मे गैर-बराबरी की खाई बढती जा रही है ।

श्री उपसभापति राजनारायण जी आप का एक मिनट बाकी है ।

श्री राजनारायण : राम की बड़ी महिमा गायी जाती है । राम की खूबी क्या थी ? राम के राज्य मे विषमता नही थी । राम ने गद्दी पर बैठ कर पहले ही दिन क्या कहा ? राम गरीबो के निवाज कहे गये क्योंकि राम ने विलासिता की वस्तुओ को मना कर दिया । चारा, पानी और अनाज जो इसान की जिन्दगी के लिए आवश्यक वस्तुए थी उन सामग्रियो को सस्ते से सस्ता किया । आज यह काग्रेस की सरकार श्रीमती इन्दिरा नेहरू गांधी जो अपना शासन चला रही है उस मे इसान की जरूरत की चीजो की कीमत ही बढती जा रही है ।

इसलिये मैं चाहता हू कि एक कायदा कानून बने कि यहां पर जो हरिजनो के बच्चे, परिगणित जाति के बच्चे है उनको कोई भी दिक्कत न हो उच्चतम शिक्षा प्राप्त करने के लिए और उनको बडी नौकरियो मे जगह मिले, उनको खेतो पर जगह मिले, उनको कल-कारखानो में जगह मिले, तब जा कर दूसरो को मिले ।

श्रीमन्, इसके बाद फिर हमारा दूसरा नम्बर आयेगा पिछड़ी जातियो के बारे मे ।

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Rajnarainji, I am adjourning the House now. The House stands adjourned till 11 A.M. on Monday.

The House then adjourned at six of the clock till eleven of the clock on Monday, the 7th September, 1970.

MGIPRRND 1st Sec.—15 RS—16-11—70—400.